प्रकाश की एक किरण पर

अल्बर्ट आइंस्टीन की कहानी



प्रकाश की एक किरण पर

अल्बर्ट आइंस्टीन की कहानी





100 साल पहले जब आकाश में तारे घूम रहे थे,
और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रही थी, और जब
मार्च की हवाएँ नदी के तट पर बसे एक छोटे से शहर
पर बह रही थीं तब एक बच्चे का जन्म हुआ.

माता-पिता ने उसका नाम अल्बर्ट रखा.





अल्बर्ट एक साल का हुआ. लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं बोला.



अल्बर्ट दो साल का हुआ. पर उसने एक शब्द भी नहीं कहा.



फिर अल्बर्ट तीन साल का हुआ. और वो फिर भी कुछ नहीं बोला.



उसने बस अपनी बड़ी-बड़ी जिज्ञासु आँखों से चारों ओर देखा.
वो देखता रहा और अचरज करता रहा. और अचरज करता रहा.



उसके माता-पिता को चिंता हुई. छोटा अल्बर्ट बाकी बच्चों से इतना अलग क्यों था? क्या कुछ गड़बड़ थी? लेकिन वो उनका ही बच्चा था, इसलिए वे उससे खूब प्यार करते थे. . . चाहें वो जैसा था.



एक दिन जब अल्बर्ट बिस्तर पर बीमार पड़ा तो उसके पिता ने उसे एक कम्पास दिया. कम्पास की गोल डिब्बी में एक चुंबकीय सुई थी. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अल्बर्ट कम्पास को किस ओर मोड़ता, क्योंकि चुम्बकीय सुई हमेशा उत्तर की ओर ही इशारा करती थी, जैसे कि कोई अदृश्य हाथ उसे पकड़े हो. अल्बर्ट उससे इतना हैरान हुआ कि उसका पूरा शरीर कांपने लगा.

अचानक उसे यह पता चला कि दुनिया में ऐसे तमाम रहस्य छिपे थे जिन्हें अभी भी कोई अच्छी तरह नहीं समझ पाया था.

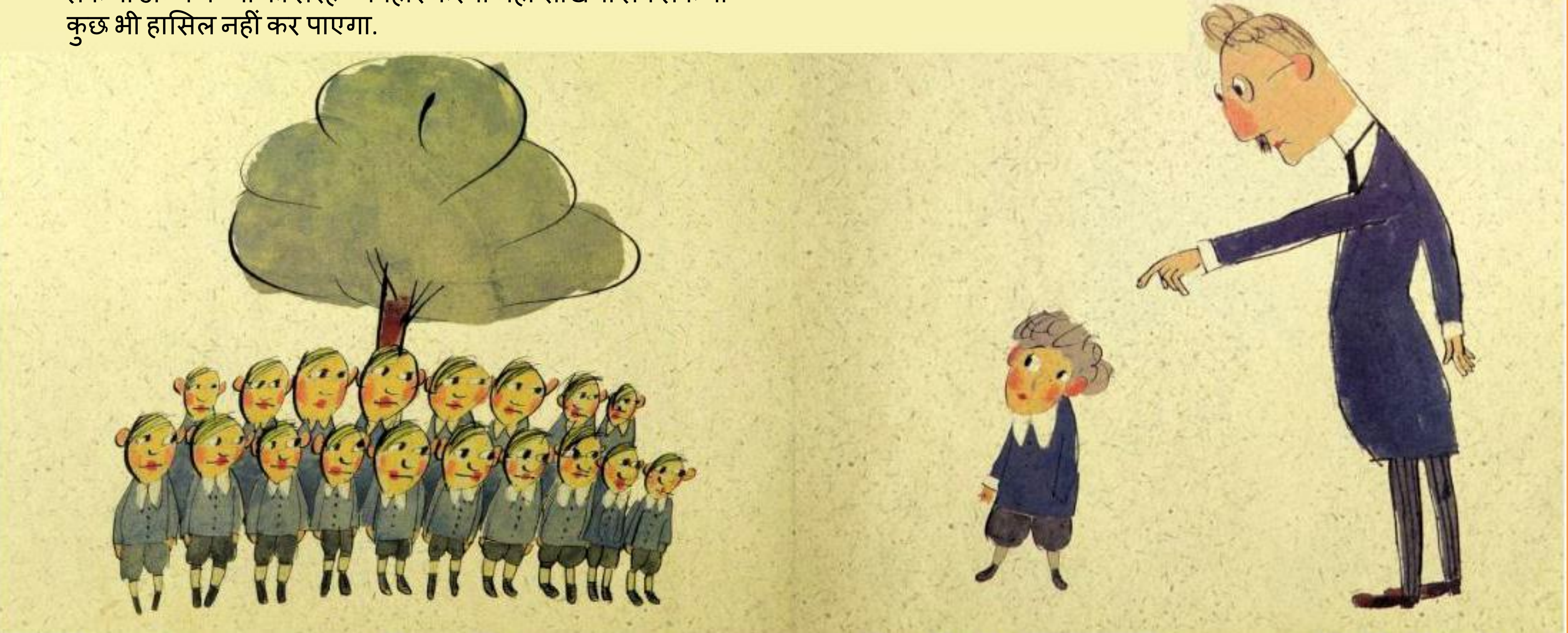
वो उन रहस्यों को समझना चाहता था.



फिर अल्बर्ट सवाल पूछने लगा. वो घर पर सवाल पूछता था. वो स्कूल में इतने सारे सवाल पूछता था कि कुछ शिक्षकों को अल्बर्ट क्लास में एक अड़चन लगने लगा. शिक्षकों ने अल्बर्ट से कहा कि जब तक वो अन्य बच्चों की तरह व्यवहार करना नहीं सीखेगा तब तक वो कुछ भी हासिल नहीं कर पाएगा.

लेकिन अल्बर्ट अन्य छात्रों की तरह नहीं बनना चाहता था.

वह दुनिया के छिपे रहस्यों को खोजना चाहता था.





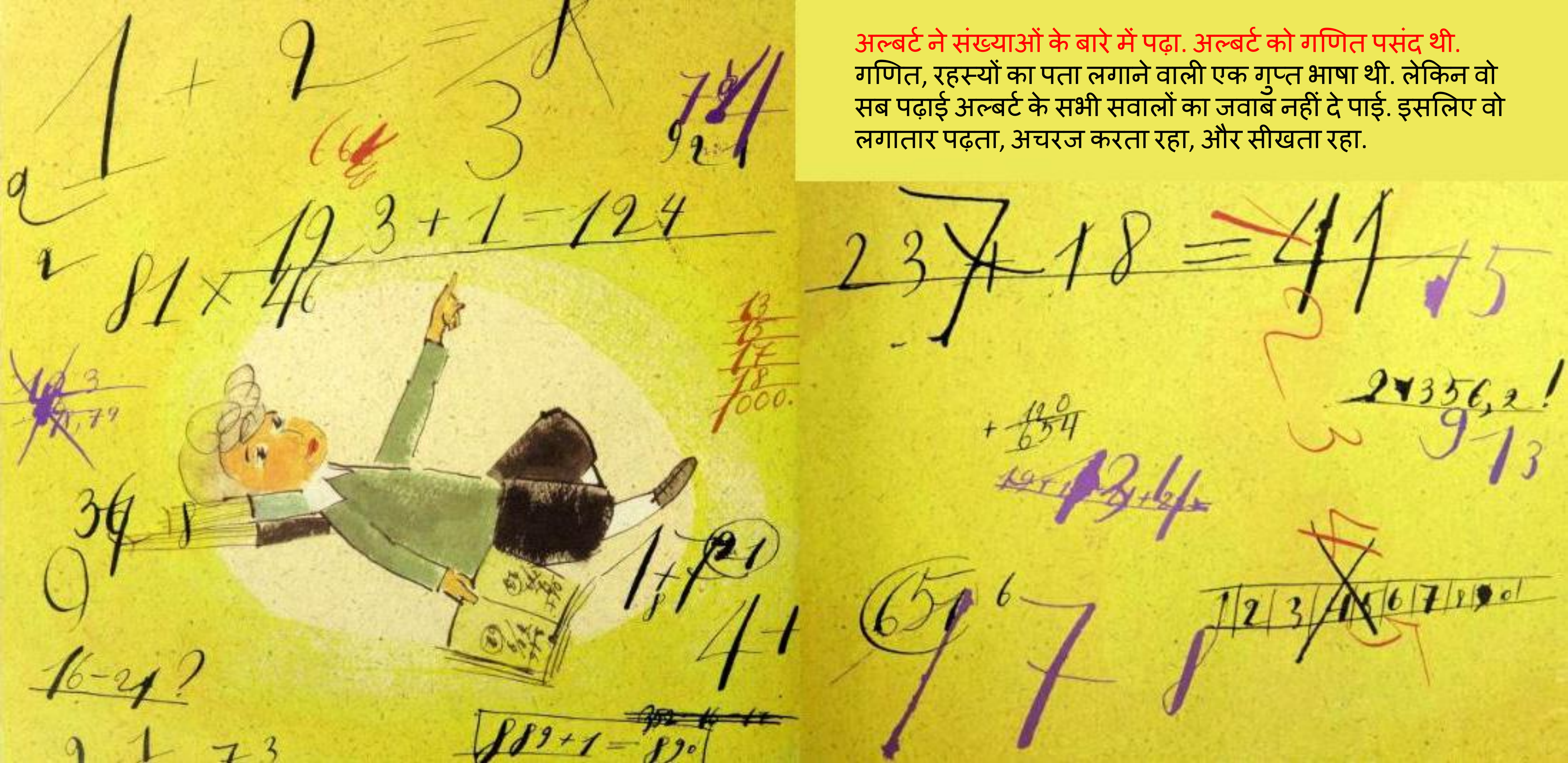
एक दिन जब अल्बर्ट अपनी साइकिल पर शहर से कुछ दूर जा रहा था, तब उसने सूरज की किरणों को पृथ्वी की ओर आते हुए देखा. उसने सोचा, अगर मैं उनमें से एक किरण पर सवारी करूं तो कैसा होगा? फिर उसी समय और उसी जगह, अल्बर्ट अब अपनी साइकिल पर नहीं था, वो अब सड़क पर भी नहीं था. वो सूर्य प्रकाश की एक किरण पर सवार होकर अंतरिक्ष में दौड़ लगा रहा था. अल्बर्ट के दिमाग में तब तक का यह सबसे बड़ा और सबसे रोमांचक विचार था. इस अनुभव ने उसके दिमाग को सवालों से भर दिया.



फिर अल्बर्ट ने पढ़ना और अध्ययन करना शुरू किया.

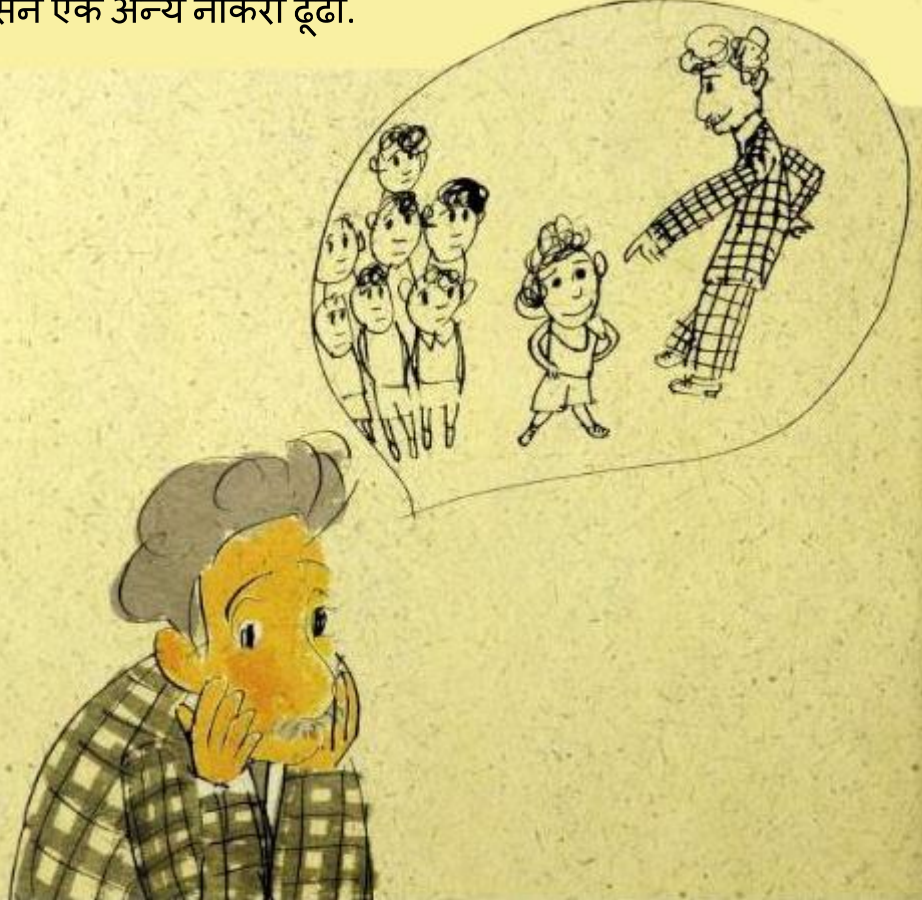
उसने प्रकाश और ध्वनि के बारे में पढ़ा. गर्मी और चुंबकत्व के बारे में भी. उसने गुरुत्वाकर्षण के बारे में भी पढ़ा. गुरुत्वाकर्षण वो अदृश्य शक्ति थी जो हमें पृथ्वी की ओर खींचती थी और चंद्रमा को बाहरी अंतरिक्ष में तैरकर जाने से रोकती थी.





अल्बर्ट ने संख्याओं के बारे में पढ़ा. अल्बर्ट को गणित पसंद थी.
गणित, रहस्यों का पता लगाने वाली एक गुप्त भाषा थी. लेकिन वो सब पढ़ाई अल्बर्ट के सभी सवालों का जवाब नहीं दे पाई. इसलिए वो लगातार पढ़ता, अचरज करता रहा, और सीखता रहा.

अल्बर्ट कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म करके अपने मनपसंद विषयों को पढ़ाना चाहता था.... उन सब विषयों को जिनको उसने गहराई से पढ़ा था. लेकिन अल्बर्ट को शिक्षक की कहीं कोई नौकरी नहीं मिली.
इसलिए उसने एक अन्य नौकरी ढूंढी.



उसे एक सरकारी ऑफिस में एक साधारण, सकून की नौकरी मिली. उस दफ्तर में उसने अन्य लोगों के विचारों और आविष्कारों के साथ काम किया. वो अपना काम बहुत अच्छी तरह और बहुत जल्दी कर डालता था. . . इससे उसे सोचने और अचरज करने के लिए काफी समय मिल जाता था.



अल्बर्ट अपनी चाय में चीनी को घुलते हुआ देखता था
- चीनी चाय में कैसे गायब हो जाती थी.
वो कैसे होता था?

वो अपने पाइप से निकलते धुएं को निहारता था
और उसे हवा में घुलते हुए देखता था.
एक चीज किसी दूसरे में कैसे विलीन हो जाती थी?



फिर उसने उन्हें गहराई से समझना शुरू किया. उसने इस विचार के बारे में सोचा कि दुनिया में सब चीज़ें, छोटे-छोटे कणों की बनीं थीं जिन्हें देख पाना बहुत मुश्किल था - उन्हें "परमाणु" कहा जाता था. कुछ लोगों को परमाणुओं की मौजूदगी पर यकीन नहीं था, लेकिन अल्बर्ट के विचारों ने यह साबित करने में मदद की दुनिया में हर चीज परमाणुओं की बनी होती थी.

यहां तक कि चीनी और चाय, धुआं और हवा भी.
अल्बर्ट और हम सभी लोग.









अल्बर्ट ने गति के बारे में भी सोचा.

उसने महसूस किया कि दुनिया में हर चीज़ हमेशा गतिशील होती है.

अंतरिक्ष में सभी पिंड घूमते हैं, वे समय के साथ बढ़ते हैं. यहां तक कि जब हम सोते हैं तब भी हम अपने ग्रह के साथ सूर्य की परिक्रमा करते हैं, और हमारा जीवन भविष्य में यात्रा करता है. अल्बर्ट ने समय और स्पेस को एक नए नज़रिए से देखा. पहले कभी ने वैसे नहीं देखा था.

अल्बर्ट ने अपने विचारों को लिखा. फिर उसने उन कागज़ों को लिफाफे में डाला और उन्हें विज्ञान पत्रिकाओं को भेजा. पत्रिकाओं ने अल्बर्ट द्वारा भेजे हर निबंध को छापा. दूसरे वैज्ञानिकों और प्रोफेसरों ने भी अल्बर्ट के लेखों और शोध में रुचि दिखाई. वाकई में वे बहुत दिलचस्प थे!

फिर लोगों और संस्थाओं ने अल्बर्ट को उनके साथ काम करने और पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया.

जीवन में पहली बार, लोगों ने कहा, "अल्बर्ट एक अद्भुत प्रतिभा का धनी है!"
अब अल्बर्ट सारा दिन वो कर सकता था जिससे उसे प्यार था.
अब वो कल्पना, आश्चर्य, और सोच की दुनिया में जी सकता था.





अल्बर्ट बहुत बड़ी-बड़ी चीजों के बारे में सोचता था.

वो पूरे ब्रह्मांड के आकार और माप के बारे में सोचता था.



वो बहुत छोटी-छोटी चीजों के बारे में भी सोचता था.

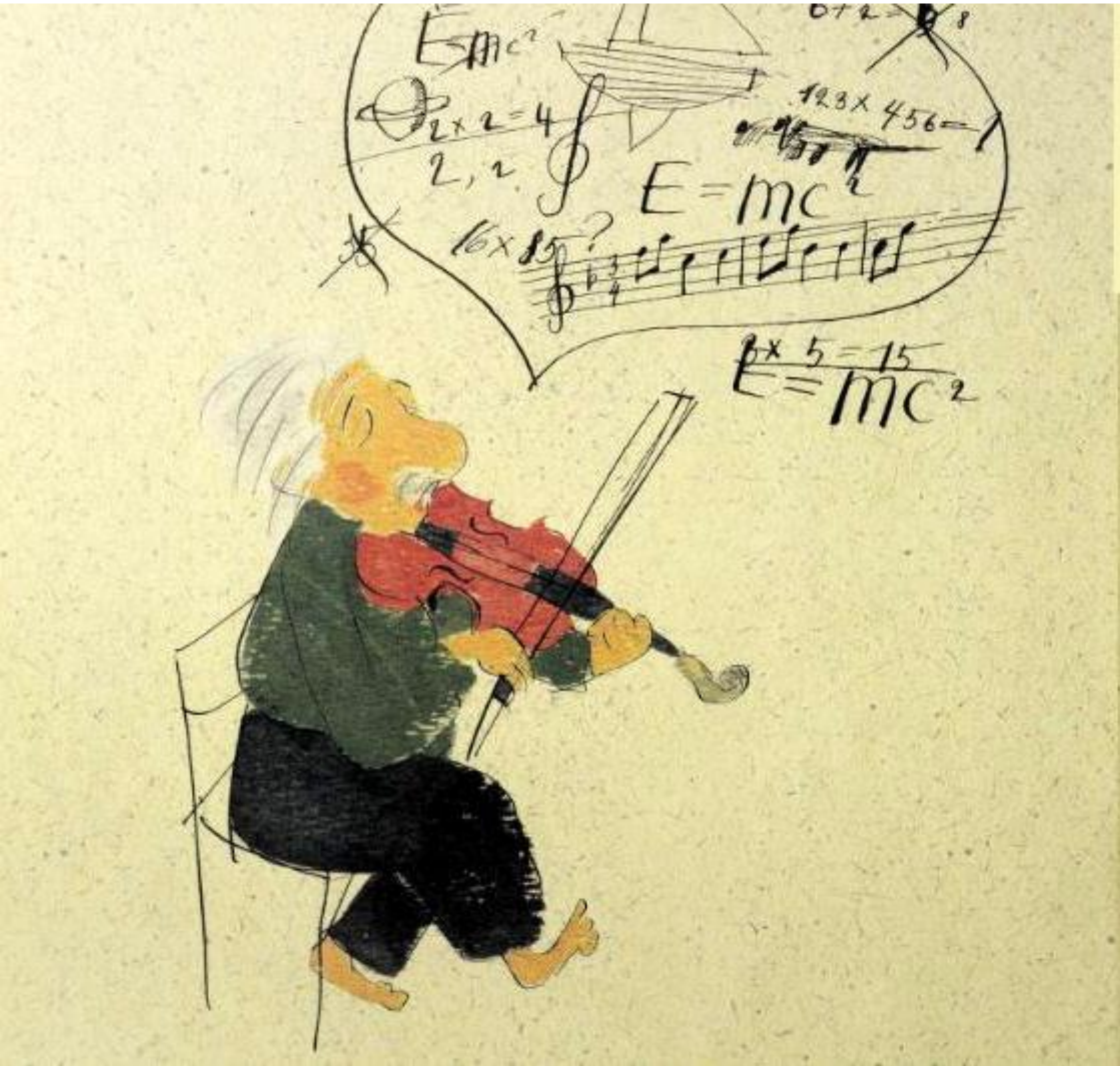
जैसे कि परमाणु - जिनसे सब कुछ बना था उनके भीतर क्या था. उसने चुंबकत्व और गुरुत्वाकर्षण जैसे रहस्यमयी बलों के बारे में भी सोचा. सभी चीजें कैसे काम करती हैं उन्हें समझने के उसने नए तरीके खोजे.





अल्बर्ट जहाँ भी जाता वो बस सोचता और सोचता. अल्बर्ट की पसंदीदा सोचने वाली जगहों में एक उसकी छोटी नाव थी. जब हवा बहती तो वो अपनी कल्पनाशीलता को पानी में उड़ान भरने देता था.





जब कभी अल्बर्ट को किसी बेहद पेचीदा और मुश्किल समस्या से जूझना होता तो वो अपनी नाव को किनारे पर खींच लेता था और फिर अपना वायलिन बजाता था.

संगीत, अल्बर्ट को बहुत सकून देता था. उसे लगता था कि संगीत से वो बेहतर सोच पाता था.



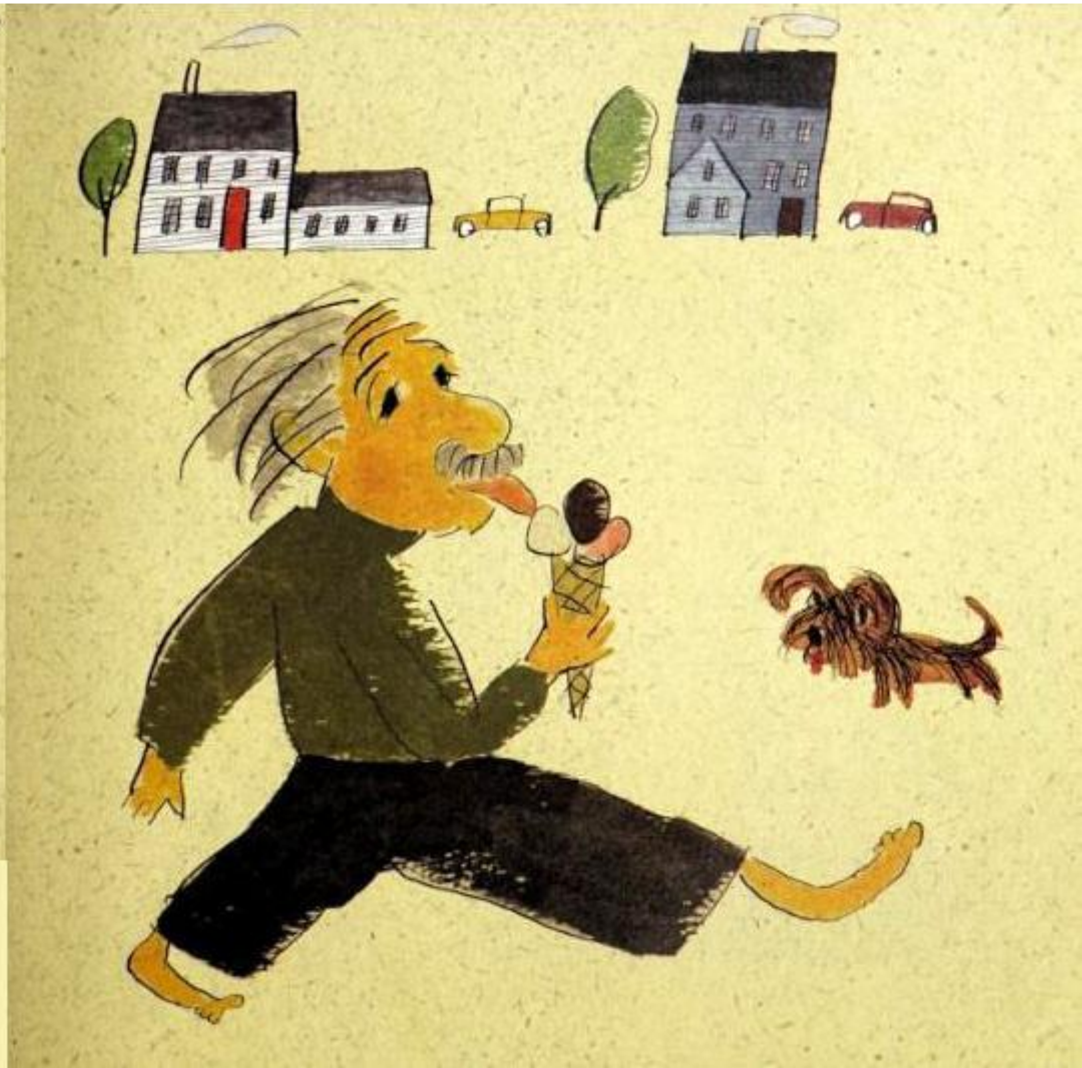
अल्बर्ट ने ऐसे कपड़े भी चुने जिन्हें पहनकर वो अच्छी तरह सोच सके.

उसकी पसंदीदा ड्रेस थी एक ढीली-ढाली पैंट और स्वेटर. वो बिना मोजों के जूते पहनता था. उसने कहा क्योंकि वो अब बड़ा हो गया था, इसलिए अब कोई भी उसे मोज़े पहनने को मज़बूर नहीं कर सकता था.

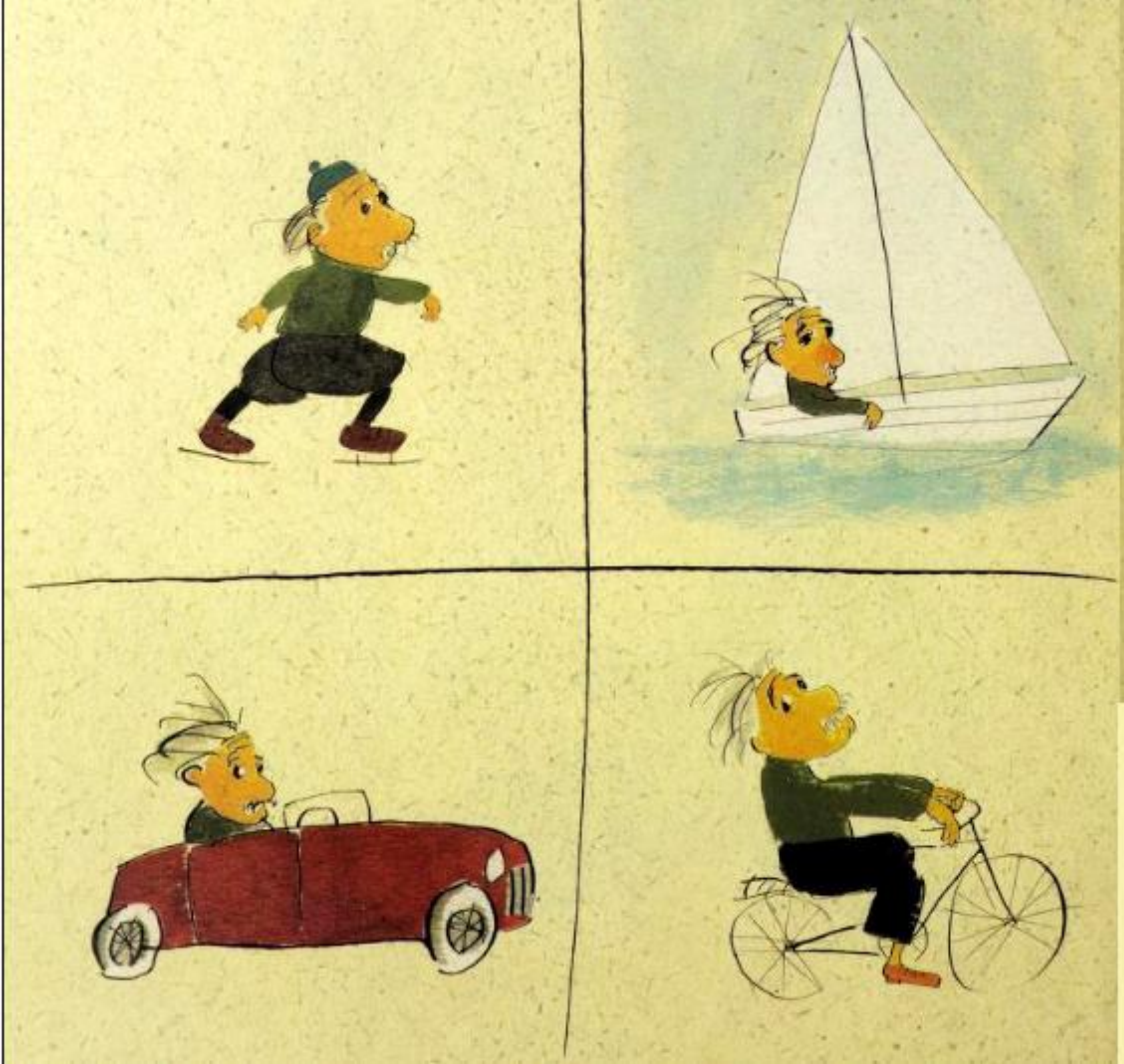








जिस कस्बे में वो रहता था, वहां की सड़कों पर वो अपने विचारों में मग्न होकर घूमता रहता था. बाकी लोग उसकी इस आदत के अभ्यस्त हो गए थे. कभी-कभी लोग उसे आइसक्रीम का कोन खाते हुए देखते थे. उसके लंबे, बहते, जंगली बालों के साथ उसे कहीं भी पहचाना जा सकता था. उम्र के साथ अब उसके बाल सफेद हो चुके थे.





अल्बर्ट जहाँ भी गया उसने ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने की कोशिश की. और वो उस प्रकाश की किरण को कभी नहीं भूला जिस पर चढ़ कर उसने अपनी पहली कल्पना की उड़ान भरी थी.

अल्बर्ट ने यह पता लगाया कि कोई भी व्यक्ति, या चीज, अंतरिक्ष में प्रकाश की गति से अधिक तेजी से यात्रा नहीं कर सकती थी.

उसने यह भी पता लगाया कि यदि चीज़ें, प्रकाश के आसपास की गति से यात्रा करेंगी तो कई अजीबोगरीब चीजें होंगी!

उस स्पीड पर शायद अल्बर्ट के लिए केवल कुछ मिनट ही गुजरें हों

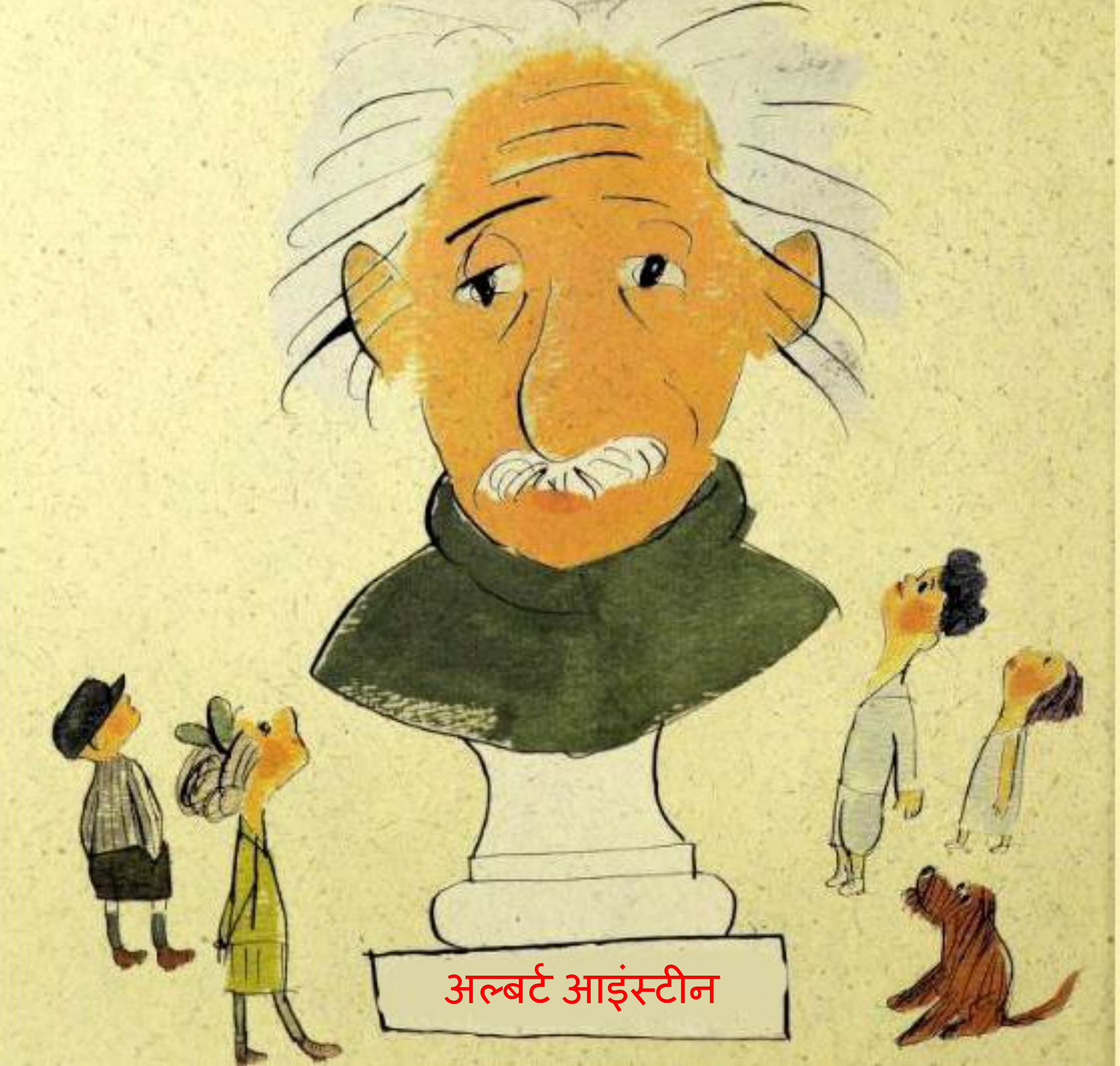


पर बाकी लोगों के लिए अनेकों साल बीत गए होंगे!



यह विचार इतना अद्भुत था कि लोगों को उस पर पहले विश्वास ही नहीं हुआ. लेकिन वैज्ञानिकों ने बाद में उसकी सच्चाई को साबित किया.





अल्बर्ट अपने जीवन के अंतिम दिन के अंतिम क्षण तक सोचता ही रहा.

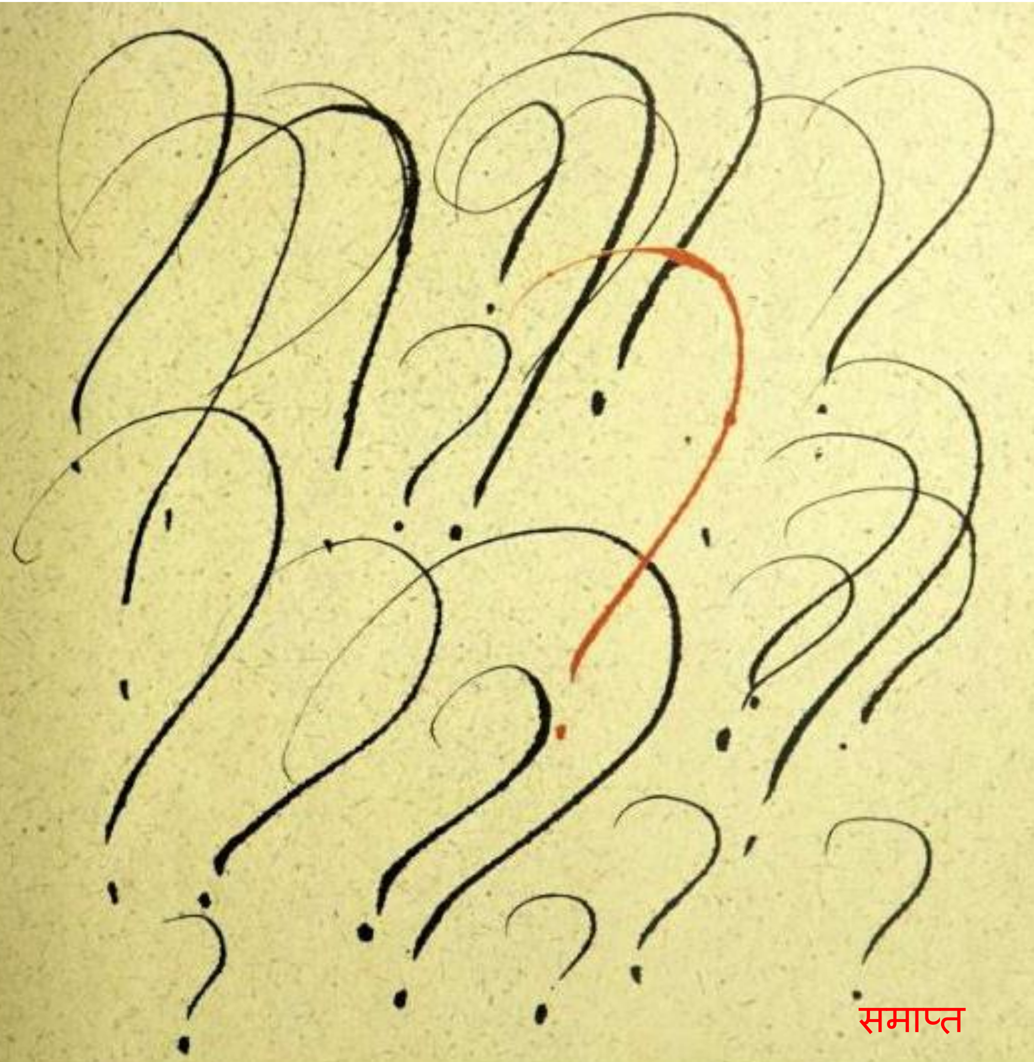
उसने वो सवाल पूछे जिन्हें पहले किसी ने कभी नहीं पूछे थे. उसने वो उत्तर खोजे वो पहले कभी किसी ने नहीं खोजे थे. उसने कल्पनाशीलता के वे सपने देखे जो पहले कभी किसी ने नहीं देखे थे.

अल्बर्ट के विचारों ने अंतरिक्ष यान और उपग्रह बनाने में मदद की, जिनसे लोग चंद्रमा और उससे आगे की यात्रा कर सके. अल्बर्ट की सोच से हमें अपने ब्रह्मांड को समझने में मदद मिली. किसी ने भी पहले, वैसा नहीं सोचा था.

लेकिन साथ-साथ अल्बर्ट हमारे सामने कई बड़े प्रश्न छोड़ गया. आज भी वैज्ञानिक उन सवालों पर काम कर रहे हैं.

ऐसे प्रश्न जिनका उत्तर शायद आप एक दिन खोजेंगे . . .
अपनी सोच और कल्पनाशक्ति से.





समाप्त